

आया शरणि तुम्हार छोड़ा सारा संसार
ओ दशरथ दुलार मोंहि राखो चरणनि सो लगाइके ।
मैं हूं दुष्ट दशानन का भाई मैंने व्यर्थ उमरिया गंवाई
अब आया दरबार मेरी सची सरकार ओ.....
मेरी दुनिया तो है बरबाद ही अब कीजो प्यारे दिल शाद ही
मेरे दोष हैं हजार आप अधम उधार ओ.....
ओ जीवन मरण के साथी तोंहि ना विसारूं दिन राती
तुम अति ही उदार प्यारे कौशल्या कुमार ओ.....
सुनी कपीश से कथा सुखदाई तुम आरत बंधु रघुराई
करूं विकल पुकार रघुवंश सरदार ओ.....
बड़ी बांह गहे की लाज है तेरी बान यही रघुराज है
प्रणत पाल तू खरारि मैं जाऊं बलहार ओ.....
तीन लोक तुम ही कइ ठौर हो तुम शरणि पाल शिरमोर हो
अब वेगि ही उबार निज जन रखवार ओ.....
तेरी कीरति जागी जहान है तुम देत अभय वरदान है
मैगसि प्राण आधार श्री राम रिझिवार ओ.....